Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12** ] [ Total No. of Printed Pages : **4**

# SLA–105

## B.A. Part–III Due of B.A. Part–I (Supplementary) Examination, 2022

## HINDI LITERATURE

Paper - I

## (प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य)

*Time : 1½ Hours* ] [ *Maximum Marks : **100***

**खण्ड–अ** **(अंक : 2 × 10 = 20)**

**नोट** :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

**खण्ड–ब** **(अंक : 8 × 5 = 40)**

**नोट** :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

**खण्ड–स** **(अंक : 20 × 2 = 40)**

**नोट** :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

**खण्ड–अ** प्रत्येक 2

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर सीमा **50** शब्द) :

(i) 'पृथ्वीराज रासो' महाकाव्य के रचयिता एवं इसमें वर्णित 'समय' (सर्ग अथवा अध्याय) की संख्या के बारे में बताइए।

(ii) विद्यापति द्वारा रचित तीन महत्वपूर्ण काव्य कृतियों का नामोल्लेख करते हुए उनकी विषयवस्तु का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(iii) तुलसीदास की भक्ति-भावना पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(iv) 'पद्मावत' महाकाव्य की भाषा-शैली पर टिप्पणी लिखिए।

(v) रैदास की भक्ति-भावना के प्रमुख तत्व कौन-कौनसे हैं ?

(vi) ''मानुष हौं तो वही रसखानि, बसौ ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन'' पंक्ति में अभिव्यक्त कवि की मनोदशा के बारे में बताइए।

(vii) 'सूफी' शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ के सम्बन्ध में प्रमुख मतों का परिचय दीजिए।

(viii) आदिकालीन काव्य की **दो** प्रमुख रचनाओं एवं उनके रचनाकारों का नामोल्लेख कीजिए।

(ix) काव्य गुण किसे कहते हैं ? ये मुख्यत: कितने प्रकार के होते हैं ?

(x) मानवीकरण अलंकार का उदाहरण लिखते हुए इस अलंकार की प्रमुख पहचान बताइए।

**खण्ड–ब** प्रत्येक 8

**नोट** :– निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **पाँच** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (उत्तर-सीमा **200** शब्द) :

2. बज्जिय घोर निसाँन, राँन चौहान चहों दिसि।
सकल सूर सामंत, समरि बल जंत्र मंत्र तिस॥
उठ्ठि राज प्रथिराज, बाग मनों लग्ग वीर नट।
कढ़त तेग मन बेग, लगत मनों बीजु झट्ट घट॥
थक रहे सूर कौतिक गगन, रँगन मगन भइ शोन धर।
हदि हरषि वीर जग्गे हुलसि, हुरेउ रंग नव स्तवर॥

3. देख-देख राधा-रूप अपार।
अपुरब के बिहि आनि मिलाओल खिति तल लाबनि-सार।
अंगहि अंग अनंग मुरछायत हेरए पड़ए अधीर।
मनमथ कोटि मथन करु जे जन से हेरि मधि गीर।
कत-कत लखिमी चरण-तल नेओछए रंगिनि हेरि विभोरि।
करु अभिलाख मनहि पद-पंकज अहोनिसि कोर अगोरि।

4. केशव! कहि न जाइ का कहिए।

देखत तब रचना विचित्र अति, समुझि मनहि मन रहिये॥

सून्य भीति पर चित्र, रंग नहिं, तनु-बिनु लिखा चितेरे।

धोये मिटै न, मरउ भीति, दुख पाइय इहि तनु हेरे॥

रबिकर-नीर बसै अति दारुन, मकर रूप तेहि मांहि।

बदन-हीन सो ग्रसै चराचर, पान करन जे जांहि॥

5. मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै।

जैसैं उड़ि जहाज को पंछी, फिरि जहाज पै आवै।

कमल-नैन कौं छाँड़ि महातम, और देव कौं ध्यावै।

परम गंग कौं छाँड़ि पियासौ, दुरमति कूप खनावै।

जिहिं मधुकर अंबुज-रस चाख्यौ, क्यौं करील-फल भावै।

सूरदास प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै।

6. मैं तो साँवरे के रँग राची।

साजि सिंगार, बांधि पग घुँघरू, लोक-लाज तजि नाची।

गयी कुमति, लयी साध की संगत, भगत-रूप भई साँची।

गाइ गाइ हरि के गुण निसिदिन, काल-व्याल सों बाँची।

उण बिन सब जग खारो लागत, और बात सब काची।

मीराँ श्रीगिरिधरन लाल सूँ, भगति रसीली जाँची।

7. या लकुटी अरु कामरिया पर, राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।

आठहुँ सिद्धि नवों निधि को सुख, नन्द की गाइ चराइ बिसारौं॥

रसखानि कबौं इन आँखिन सों, ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।

कोटिक ये कलधौत के धाम, करील के कुंजन ऊपर वारौं॥

8. अब कैसे छूटै, राम नाम रट लागी॥ टेक॥

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी॥

प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा॥

प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती॥

प्रभु जी तुम मोती हम धागा, जैसे सोने मिलत सुहागा॥

प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा॥

**खण्ड–स** प्रत्येक 20

**नोट** :– निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर-सीमा **500** शब्द) :

9. कबीर की काव्यगत प्रवृत्तियों का सोदाहरण वर्णन कीजिए।

10. सूफी प्रेममार्गी काव्य परंपरा का परिचय देते हुए मलिक मुहम्मद जायसी का वैशिष्ट्य निरूपित कीजिए।

11. आदिकाल के नामकरण संबन्धी विविध मतों का परिचय देते हुए प्रमुख प्रवृत्तियों का विवेचन कीजिए।

12. शब्द-शक्ति किसे कहते हैं ? इसके भेदों का परिचय देते हुए उदाहरण सहित समझाइए।